रचयिता और रचना का सत्य ज्ञान

परमात्म सत्ता

ब्राह्मण वर्ण

कलियुग

संगम युग

देवता वर्ण
१२५० वर्ष

सूर्य वंशी घराना

सतयुग

धर्मसत्ता | राज्यसत्ता | विज्ञानसत्ता

शुद्र वर्ण १२५० वर्ष

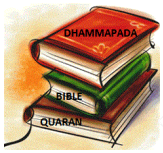

धर्मसत्ता + राज्य सत्ता

ब्रह्मा की रात

ब्रह्मा का दिन

गीता ज्ञान दाता

परमात्मा शिव

सच्चा वेदव्यास

परम महिमा योग्य

परम नृत्य-संगीतकार

परम मतगुरु

परम वैद्य

क्षत्रिय वर्ण १२५० वर्ष

चंद्रवंशी घराना

द्वापर युग

त्रेता युग

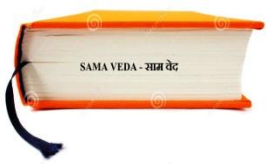

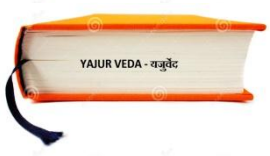

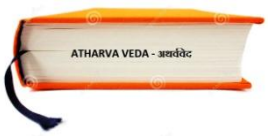

वैश्य वर्ण १२५० वर्ष

धर्मसत्ता | राज्य सत्ता

वर्तमान संगमयुग समय महाभारत लड़ाई (तीसरे विश्व महायुद्ध) के ठीक पहले निराकार ज्योतिर्बिंदु परमपिता परमात्मा शिव साधारण मनुष्य तन प्रजापिता ब्रह्मा जिनको शास्त्रों में अधेड़ उम्र वाला चतुर्मुखी सहस्त्र भुजा युक्त दिखाया गया है का आधार लेकर वही गीता के सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं जो अपने सहस्त्र भुजाधारी सहयोगी बच्चों द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को चारों दिशाओं में फैलाने का प्रतीक है जिसे हम भक्ति मार्ग में सुनते आये हैं जिसके पश्चात स्वर्णिम सतयुगी भारत में श्री लक्ष्मी व श्री नारायण का अचल अखंड अटल एक छत्र राज्य का पुनरागमन होगा जहाँ १६ कला संपूर्ण, सर्व गुण संपन्न निर्विकारी पावन देवी देवतायें राज्य करेंगे तब यह धरा स्वर्ग, बहिश्त, जन्नत अथवा हेवन कहलायेगा ।

गीता के वचन अनुसार अति धर्म ग्लानि व घोर भ्रष्टाचार के समय याने कलियुग अज्ञान अन्धकार रुपी रात्रि में निराकार ज्योतिर्बिंदु शिव परमात्मा अविनाशी भारत भूमि पर अवतरित हो अनेक धर्म विनाश कर एक आदि सनातन देवी देवता धर्म के अंतर्गत नयी स्वर्गीय दुनिया रामराज्य की स्थापना करते हैं जिसकी यादगार भारतवासी शिवरात्रि के रूप में मनाते हैं । यह क्रम हर ५००० वर्ष बाद पुनरावृत्त होता रहता है । भक्तिमार्ग में परमात्मा के सन्दर्भ में सबसे बड़ी ग्लानि यह कर दी है कि परमधाम निवासी, विकार रहित, जन्म मरण रहित, सुख दुःख से न्यारे शिव परमात्मा को सर्वव्यापी नाम रूप से न्यारा कह विभिन्न रूप में अवतरित दिखाकर विकारी एवं जन्म-मरण के फेरे में डाल दिया इससे उनका सृष्टि चक्र के अंत में अपने सर्वोच्च धाम से इस धरा पर दिव्य जन्म (परकाया प्रवेश) द्वारा अवतरित होकर सभी आत्माओं एवं प्रकृति को पावन बनाकर नरक से स्वर्ग में परिवर्तित करना, सभी को मुक्ति जीवनमुक्ति का वरदान देकर सद्गति करना और अपने त्रिमूर्ति रचना ब्रह्मा, विष्णु, शंकर द्वारा स्थापना, पालना , विनाश करने का कर्त्तव्य भी सिद्ध नहीं होता ।

प्रजापिता ब्रह्मा भी परमात्मा शिव से सहज राजयोग एवं ईश्वरीय ज्ञान सीख कर श्रेष्ठ पुरुषार्थ के बल से सतयुग का प्रथम प्रिंस १६ कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी श्री कृष्ण का सर्वोच्च पद प्राप्त करते हैं जो राज्याभिषेक के पश्चात श्री लक्ष्मी नारायण की जोड़ी के रूप में सूर्यवंशी घराने में राज्य करते हैं । सतयुग के पश्चात त्रेतायुग में १४ कला युक्त राम सीता का चंद्रवंशी घराने में राज्य चलता है । इससे सिद्ध होता है कि संगम युग पर ही परमात्मा शिव गीता ज्ञान द्वारा ब्राह्मण, देवता व क्षत्रिय धर्म की स्थापना करते है और इस गीता ज्ञान द्वारा ही श्री कृष्ण का प्रथम महाराजकुमार के रूप में नयी दैवी राजधानी में जन्म होता है अतः निराकार परमात्मा शिव ही सच्चे गीता ज्ञान दाता और श्री कृष्ण के रचयिता याने पारलौकिक पिता हुए । श्री कृष्ण तो साकार रचना हुए जो ८४ के जन्म मरण के चक्र में आते है , गर्भ द्वारा जन्म लेकर लौकिक माता- पिता से पालना लेते है जबकि परमात्मा शिव तो सर्व के पालनहार, निराकार, स्वयंभू और अजन्मा हैं याने परकाया प्रवेश द्वारा दिव्य जन्म लेते हैं इसलिये जन्म-मरण, सुख दुःख रहित तथा कर्म बंधन मुक्त हैं, उन्हें ही भगवान् की संज्ञा दी जा सकती है जबकि कृष्ण तो दैवी गुण धारण करने वाला देवता की श्रेणी में आता है । शास्त्रों में आत्मा को ८४ जन्म के बजाय ८४ लाख के फेरे में दर्शाना व साकार कृष्ण को निराकार शिव के बजाय गीता का भगवान संबोधित करना यह बड़ी भूल कर दी है जिससे गीता खंडित होकर उसका महत्व कम हो गया । दूसरी बात, भगवान् के अवतरित होने पर भी सभी को अज्ञान नींद में सुला दिया है ।

ब्रह्मा मुख द्वारा अडॉप्ट किये गए ईश्वरीय बच्चे वा गॉडली स्टूडेंट वा गॉडली फॉलोअर ही सच्चे ब्राह्मण कहलाते है क्योंकि परमात्मा एक साथ तीन रूप से पार्ट बजाते हैं बाप के रूप से स्वर्गीय वर्सा , टीचर के रूप से स्पिरिचुअल ज्ञान व सतगुरु के रूप से मुक्ति (गति) व जीवन्मुक्ति (सद्गति) देते हैं ।

परमात्मा शिव ही सच्चे व्यास हैं जो ब्रह्मा मुख से गीता ज्ञान द्वारा सभी वेदों, शास्त्रों व उपनिषदों का सार सुनाते हैं और इस ज्ञान को धारण कर सुख देने वाले मुख वंशावली ब्राह्मण बच्चे ही सुखदेव हैं। वास्तव में यह गीता ही सच्चा शिवपुराण है जिसमें भगवान् शिव स्वयं रचियता और रचना के रहस्य एवं सृष्टि चक्र के आदि मध्य अंत का ज्ञान ब्रह्मा के माध्यम से उजागर करते हैं। यही अमर बनने की अमरकथा है जो आत्मा रुपी पार्वती को सुनाते हैं और नर से नारायाण बनने की सत्यनारायण कथा भी है।

परमात्मा शिव व ब्रह्मा की जोड़ी का गायन ही शास्त्रों में कपिलदेव के रूप में है कपल याने जोड़ी ब्रह्मा की मुख वंशावली **(adopted)** बेटी जगदम्बा सरस्वती ही कामधेनु है जो स्वर्ग में २१ जन्मों के लिए सभी की मनोकामनाएं पूर्ण करती है।

परमात्मा शिव सर्व आत्माओं , देवात्माओं, धर्मात्माओं और धर्म पिताओं के भी पिता होने कारण उन्हें परमपिता व गॉड फादर कह पुकारते हैं व उनके द्वारा दिया गया गीता ज्ञान को सर्वशास्त्र शिरोमणि के रूप में सन्मान देते हैं। द्वापर युग में याने मध्यकालीन समय के आरम्भ में चार वेदों की रचना हुई है जिसे हिन्दू धर्म या वैदिक धर्म जो देवता धर्म का रूपांतर है में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है और उसे पवित्र मानते हैं। सार रूप में कहे तो ऋग्वेद ५ तत्व व देवी देवताओं की महिमा, स्तुतिगान से सम्बंधित है जबकि वास्तव में महिमा योग्य तो एक सर्व शक्तिमान निराकार शिव परमात्मा ही है जो सत्य ज्ञान द्वारा प्रकृति सहित सर्व मनुष्यात्माओं को ५ विकारों की बीमारी से छुड़ाकर पावन बनाकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का वरदान देते हैं, भ्रष्टाचारी पतित दुःखदायी कलियुगी सृष्टि को श्रेष्ठाचारी पावन सुखदायी सतयुगी सृष्टि में परिवर्तित कर देते हैं जिससे यह संसार नरक से स्वर्ग बन जाता है। सामवेद में वाद्य संगीत व नृत्य कला का उल्लेख है जबकि परमात्मा ही परम नृत्यकार संगीतकार है जो आत्माओं को अतीन्द्रिय सुख का नृत्य करना सिखाते हैं व आत्मा के ७ गुणों के संगीत का ज्ञान देते हैं यजुर्वेद में स्वास्थ्य एवं सुखी जीवन के लिए तंत्र, मंत्र, यन्त्र का संकलन है जबकि एक परमात्मा शिव ही हमें बुद्धि को एकाग्र करने का महामंत्र देते हैं मन्मनाभव (मुझे याद करो) और मध्याजी भव (वर्से को याद करो) जिसे प्रैक्टिकल में यन्त्र प्रमाण धारण करने से आत्मा माया याने ५ विकारों पर विजयी बनती है। अथर्ववेद में उपचार पद्धति व जड़ी बूटियों का विस्तार में संकलन है जिससे स्वस्थ्य लाभ होता है जबकि परमात्मा ही वह परमवैद्य अथवा परमसर्जन है जो याद की संजीवनी बूटी वा ज्ञान योग के इंजेक्शन द्वारा आत्माओं को ६३ जन्मों के भवरोग से निजात दिलाते हैं और आत्मा देहभान को भूल स्वस्थ याने स्वस्वरूप में स्थित हो जाती है।

मानव जीवन के कल्याण अथवा भलाई के लिए दूसरे अन्य धर्म भी इस मध्यकालीन काल में अस्तित्व में आते हैं।

उदा. इस्लाम ईश्वर अथवा अल्लाह को एक बताता है जिन्होंने अपनी रचना के पालनार्थ मानव सृष्टि की रचना की तथा ईश्वर की इच्छा पर संपूर्ण समर्पण होने की शिक्षा देता है और जीवन जीने का सिद्धांत दर्शाता है। कुरान कहता है खुदा बहिश्त और धरा की ज्योत है। बुद्ध धर्म स्वयं को जानने को महत्व देता है, उसके अनुसार दया व कर्म ही धर्म है और साथ में यह शिक्षा देता है कि यह संसार दुःख और पीड़ाओं से भरपूर है जिसका एकमात्र निवारण का उपाय है इच्छाओं रुपी मूल कारण का त्याग व अष्टांग मार्ग के अंतर्गत मध्यम मार्ग को अपनाना। धम्मपद कहता है बुद्ध की आभा अनवरत चमक रही है क्रिस्चियन धर्म सिखाता है सत्य ईश्वर है, प्रेम ईश्वर है अतः सभी से समान रूप से प्रेम से व्यवहार करना चाहिए और ईश्वर के राज्य में जाने का मार्ग दिखलाता है। बाइबिल में जिक्र है मैं इस संसार में प्रकाश के रूप में प्रकट हुआ हूँ। सिक्ख धर्म की भी मान्यता है कि ईश्वर निराकार है सतनाम है जो सबसे ऊँचे आसमान में निवास करता है तथा संपूर्ण मानवता की सेवा करने की शिक्षा देता है।

आदिग्रंथ में वर्णित है ईश्वर सत्य होने से सभी के लिए एक ही रोशनी है । प्रायः सभी धर्मों में ईश्वर को प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप में चैतन्य ज्योति के रूप में स्मरण करते आये हैं पर कुछ समय पश्चात धर्मपिताओं को भी ईश्वर के रूप में पूजने लगे जो भूल थी क्योंकि वे पवित्र आत्माएं थी परमात्मा नहीं रचता परमात्मा तो एक ही है बाकी सभी उनकी रचना बच्चे हैं चाहे कितने ही पवित्र व दिव्य क्यों न हों

इसी तरह सभी संत, भक्त एवं प्रचारकों ने मानवता की भलाई तथा उत्थान, समाज में बुराईयों तथा दुखों को समूल नष्ट करने हेतु अच्छे गुणों को धारण करने का सन्देश दिया जिससे कि यह भूमि रहने लायक एक सुंदर स्थान बन सके लेकिन दुर्भाग्यवश समय के अंतराल में उन्नति एवं सुधार के बजाय चीजें और ही बिगड़ते चली गयीं ।

जब भी विश्व को मानवता के सामूहिक चेतना को स्वच्छ करने की अनिवार्यता महसूस होती है याने जब सामान्य रूप से विश्व या मानव के दृष्टिकोण से नहीं बल्कि ईश्वर परिभाषित आदर्श व्यक्तित्व प्राप्त करने के लिए आतंरिक जागृति या अनुभूति आवश्यक हो जाता है तब प्रश्न उठता है आदर्श या परिपूर्णता की किस परिभाषा को मैं व्यक्तिगत रूप से चुनाव करूँ ? जबकि देवता या धर्म पितायें जो सम्पूर्णता को प्राप्त अथवा करीब पहुँच चुके थे वर्तमान समय साकार रूप से उनका मार्गदर्शन मिलना संभव नहीं है तो क्या मैं शास्त्रों या दूसरे धार्मिक ग्रंथों या अपने मात-पिता से इस विषय में परामर्श करूँ ? जितने लोग उतने विभिन्न मत जिससे अधिक भ्रान्ति की सम्भावना होती है इसलिए वह एक कौन है जो मुझे सही मार्गदर्शन के साथ इन सभी प्रश्नों का हल स्पष्ट कर सके ? वह कोई ऐसा होना चाहिए जिसे सभी मानवमात्र सम्पूर्णता की श्रेणी में रखे और जो वर्तमान में उपलब्ध हो । यह कोई मेरे अभिभावक या धार्मिक गुरु या देवता नहीं जो पूर्व में इस धरा पर मौजूद थे अपितु एक परमात्मा जो सम्पूर्णता या दोषों से सर्वथा परे है वा जन्म मरण के चक्र से मुक्त ही मुझे आदर्श मानव या उत्तम पुरुष बनने का मार्ग दिखाने के साथ साथ दैवीगुण धारण करा सकता है जो उनमें समाहित है । परमात्मा सबसे पूर्ण व आदर्श व्यक्तित्व अस्तित्व में है लेकिन यह जिस्मानी व्यक्तित्व न होकर रूहानी है । ऐसा कोई नहीं जो उनसे अधिक विशेष व गुण संपन्न हो । यही कारण से यह एक ऐसा जीवित शक्ति या व्यक्तित्व है जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति और विश्व में सभी सबसे ज्यादा स्मरण करते हैं । यही एक मात्र कारण है कि गीता के वचनानुसार गीता का भगवान् निराकार शिव को स्वयं इस भारत भूमि में सभी आत्माओं तथा ५ तत्वों सहित अपनी रचना को पावन बनाने हेतु अवतरित होना पड़ा ।

परमात्मा शिव कलियुग के अंतिम समय में (संगम युग) में तीन धर्म या वर्ण की स्थापना करते हैं ब्राह्मण वर्ण संगम युग में , सतयुग के लिए देवता वर्ण व क्षत्रिय वर्ण त्रेता युग के लिए । फिर द्वापर में धर्म पिताओं द्वारा तीन मुख्य धर्मों की स्थापना होती है । इब्राहम द्वारा इस्लाम धर्म, गौतम बुद्ध द्वारा बुद्ध धर्म व क्राइस्ट द्वारा क्रिस्चियन धर्म फिर आगे चलकर शंकराचार्य संन्यास धर्म व मोहम्मद पैगम्बर मुस्लिम धर्म की स्थापना करते हैं, कलियुग में गुरुनानक देव जी सिख धर्म की स्थापना करते हैं, बाद में अनेक मठ पंथ भी इसी समय अस्तित्व में आते हैं ।

अब ५००० वर्ष का यह आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का बेहद का सृष्टि नाटक समाप्ति पर है । वर्तमान समय युग परिवर्तन का अथवा चक्र पुनरावृत्ति का समय चल रहा है । हम सभी निराकार ज्योतिर्बिंदु स्वरुप पार्टधारी आत्माओं को अपने विकर्मों के हिसाब किताब यहाँ ही चकतु कर अपने शरीर रुपी वस्त्र को त्याग कर एक परम पिता परमात्मा की याद द्वारा आत्मा को पावन बनाकर अपने वास्तविक घर परमधाम अथवा मुक्तिधाम लौटना है और हम यदि उनकी श्रीमत का पालन कर दैवीगुण धारण करेंगे तो स्वर्गीय दुनिया में १०० % पवित्रता , सुख शांति का राज्य अधिकार प्राप्त करेंगे ।
अभी नहीं तो कभी नहीं ।

अंत में परमात्मा ही क़यामत के समय धर्मराज का पार्ट भी बजाते हैं जो सभी आत्माओं को उनके पाप और पुण्य के अनुसार सजा देकर हिसाब किताब चुक्तु कर परम न्याय करते हैं ।

आज हम ऐसे विश्व में जीवन यापन कर रहे हैं जहाँ पर विविध पहचान, विविध शासन प्रणाली तथा विविध धर्म जाति है जो आदि स्वर्णिम काल के अटल, अचल, अखंड व्यवस्था से बिल्कुल भिन्न है जिसके कारण ही उस भूमि पर संपूर्ण शांति, प्रेम एवं सुख था जिसे हम जन्नत , स्वर्ग या अल्लाह का बगीचा के नाम से जानते है जहाँ देवी देवताओं का निवास था ।

अभी ही स्वयं में ईश्वरीय ज्ञान द्वारा, परमात्मा याद द्वारा, आत्म विशलेषण द्वारा दैवीगुण धारण करने के साथ साथ परमात्मा कार्य में सहयोग देकर मानवता की सेवा करने का समय है ।

देवताओं की दुनिया पूर्व में अस्तित्व में था तथा परमात्मा पिता द्वारा पुनः स्थापन हो रही है । यह प्रत्येक और विश्व की हरेक आत्मा का जन्मसिद्ध अधिकार है तथा यह परमात्म पिता का अपने रूहानी बच्चों के लिए ईश्वरीय संपत्ति है ।

परमपिता त्रिमूर्ति शिव भगवान उवाच :

मेरे प्यारे बच्चों ... मैं ही एक निराकार, अदृश्य, चमकती ज्योति हूँ,

हिन्दू मुझे " ज्योतिर्लिंगम", मुसलमान " नूर-ए-अल्लाह ", क्रिस्चियन " जेहोवा / यहोवा " याने ज्योति बिंदु कहते हैं,

मैं तुम्हारे लिए " परमधाम ", ऊँचे निवास स्थान से आया हूँ इस विश्व को पुनः स्वर्ग में परिवर्तन करने ।

मुझ पतित पावन अनादि पिता को पहचानो और याद करो तो तुम्हे हेल्थ, वेल्थ और हैप्पीनेस (स्वास्थ्य, संपत्ति और सुख) की प्राप्ति होगी और तुम आने वाली भविष्य स्वर्णिम दुनिया स्वर्ग में राज्य भाग्य प्राप्त करोगे ।